Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 19, Issue No. 1, January-2022, ISSN 2230-7540

जे. कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों का नव भारतीय समाज के निर्माण में आवश्यकताएवं उपादेयता

अशोक कुमार[1]*, डॉ. सुनिता यादव[2]

[1] शोधार्थी, राजऋर्षि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय, अवलर (राज.)

[2] शोध पर्यवेक्षक, राजऋर्षि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय, अवलर (राज.)

सरांश - ***जे. कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों और शिक्षा के स्वरूप की संकल्पना अन्य समकालीन शिक्षा शास्त्रियों से बिल्कुल भिन्न है। यदि उनकी शिक्षा प्रणाली के कुछ विशिष्टि अंषों का उपयोग हम वर्तमान शिक्षा में करें तो आगे आने वाली पीढ़ी में नव मानवतावादी एवं परिवर्तनकारी दृष्टि विकसित होगी और एक नवीन भारतीय समाज का निर्माण किया जाना सम्भव हो सकेगा। जे. कृष्णमूर्ति ने भी शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य बताये है-जीविकोपार्जन का उद्देश्य, बौद्धिक उद्देश्य, सांस्कृतिक उद्देश्य, जीवन की पूर्णता का उद्देश्य, सामाजिक उद्देश्य, सृजनात्मकता का उद्देश्य, व्यवसायिक उद्देश्य, संवेदनशीलता का उद्देश्य, वैज्ञानिकता का उद्देश्य, शारीरिक विकास, मानसिक विकास, आध्यात्मिक मूल्यों का विकास आदि। प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत जे.कृष्णमूर्ति जी के शैक्षिक विचारों की विद्यालय के लिए उपादेयता, शिक्षक के लिए उपादेयता, विद्यार्थी के लिए उपादेयता, शैक्षिक पाठ्यक्रम के लिए उपादेयता, सर्वांगीण विकास के लिए उपादेयता आदि पर प्रकाश डाला गया है, जिससे की उनके सम्पूर्ण शैक्षिक विचारों को स्पष्ट किया जा सके। उपरोक्त सुझाए गए जे.कृष्णमूर्ति के शैक्षिक चिन्तन के विभिन्न आयामों को स्वीकार करते हुए वास्तविक जीवन और सामाजिक जीवन में लागू किया जाए तो वर्तमान शैक्षिक परिदृष्य और नव-भारतीय समाज के निर्माण में उक्त शैक्षिक उपादेयता मील का पत्थर साबित होगा।***

संकेत कुँजी - जे. कृष्णमूर्ति, षैक्षिक विचार, उद्देश्य,नव भारतीय समाज के निर्माण में आवश्यकता एवं उपादेयता

----------x----------

प्रस्तावना

जे. कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों और शिक्षा के स्वरूप की संकल्पना अन्य समकालीन शिक्षा शास्त्रियों से बिल्कुल भिन्न है। यदि उनकी शिक्षा प्रणाली के कुछ विशिष्टि अंशों का उपयोग हम वर्तमान शिक्षा में करें तो आगे आने वाली पीढ़ी में नव मानवतावादी एवं परिवर्तनकारी दृष्टि पनपेगी और एक नवीन भारतीय समाज का निर्माण किया जाना सम्भव हो सकेगा। शिक्षा, मानव गुणों को विकसित करने की प्रक्रिया है। इसके द्वारा मानव की अन्तनिर्हित योग्यताओं को विकसित करके समाज सम्मत बनाया जाता है। व्यक्ति तथा समाज दोनों एक-दूसरे के पूरक है और एक के बिना दूसरे का अस्तित्व नहीं है। अतः व्यक्ति की शिक्षा इस प्रकार की हो कि वह अपने गुणों का उपयोग अपने विकास तथा समाजोत्थान के लिये करे। शिक्षा के द्वारा बालक के व्यवहार में परिवर्तन होता है, बालक को अस्तित्व प्रदान होता है। वर्तमान युग में भी 'शिक्षा' शब्द को लेकर शिक्षाशास्त्री एकमत नहीं है। विद्यालय में पठन-पाठन को शिक्षा का वास्तविक रूप माना जाता है। लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है। शिक्षा क्या है, इसे जान लेने के पष्चात् हमें शिक्षा के उद्देश्य पर विचार करना है। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, शिक्षा एक क्रिया है जिसे अच्छे या बुरे उद्देश्य से किया जा सकता है। अतः शिक्षा वही अच्छी होती है जिसके उद्देश्य अच्छे होते है। इसलिए शिक्षा का महत्व उसके उद्देश्य पर निर्भर रहता है। जे. कृष्णमूर्ति ने भी शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य बताये है-

जीविकोपार्जन का उद्देश्य- शिक्षा के उद्देश्य के सम्बन्ध में जन सामान्य का यह विचार है कि शिक्षा जीविका-निर्वाह में सहायता प्रदान करे। लेकिन यदि शिक्षा केवल रोटी कमाने का साधन बन जाएगी तो मनुष्य का विकास रूक जाएगा और उसकी मानसिक और नैतिक उन्नति न हो सकेगी।

बौद्धिक उद्देश्य- जीविका -निर्वाह की प्रतिक्रिया शिक्षा का

बौद्धिक उद्देश्य है। जीविका-निर्वाह के उद्देश्य के कारण शिक्षा उस व्यावहारिकता और कार्य में उलझी रही जिससे बुद्धि का विकास रूक गया। इस कमी को पूरा करने के लिए शिक्षा का उद्देश्य बौद्धिक बना दिया गया। यदि बौद्धिक उद्देश्य में इस बात का ध्यान रखा जाता है कि मनुष्य को भोजन की आवश्यकता पड़ती है और भोजन प्राप्त करने के लिए कार्य करना पड़ता है तो बौद्धिक उद्देश्य सफल होता।

सांस्कृतिक उद्देश्य- प्राचीन काल में शिक्षा सार्वजनिक नहीं थी। समाज के कुछ गिने-चुने लोगों को ही शिक्षा मिलती थी। समाज के भावी सदस्यों को पूर्वजों के अनुभवों और परम्पराओं में शिक्षित करने का प्रश्न उत्पन्न हुआ। क्योंकि समाज का अस्तित्व बनाए रखने के लिए यह आवश्यक था कि भावी पीढी को सामाजिक रीति-रिवाजों, परम्पराओं, नियमों तथा अनुभवों से परिचित कराया जाए। समाज के भावी सदस्यों को प्राचीन संस्कृति से अवगत कराने का सर्वोत्तम साधन शिक्षा थी। अतः इस बात पर बल दिया गया कि शिक्षा का उद्देश्य सांस्कृतिक है।

जीवन की पूर्णता का उद्देश्य- संसार के प्रसिद्ध शिक्षा विशेषज्ञ हरबर्ट स्पेन्सर ने शिक्षा का उद्देश्य जीवन की पूर्णता बताया है। स्पेन्सर का मत है कि शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य-जीवन को सभी तरह से पूर्ण बनाना है। उनका विचार है कि मनुष्य प्रतिक्षण किसी न किसी कार्य में लगा रहता है। यदि वह प्रत्येक कार्य को ठीक-ठीक करता है तो सफल जीवन व्यतीत करता है।

नैतिकता का उद्देश्य - जे. कृष्णमूर्ति का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य बालक में नैतिकता का विकास करना भी होना चाहिए। उनका मानना था कि मनुष्य में कुछ ऐसी वृत्तियाँ पायी जाती हैं जिनका सुधार करना आवश्यक है। मनुष्य के कुछ कार्य सामाजिक दृष्टि से उचित नहीं है, अर्थात् शिक्षा का उद्देश्य ऐसा होना चाहिए जिसमें मनुष्य अपनी दुर्बलताओं को दूर कर सके और वह ऐसा आचरण करे जो सबको पसन्द हो। इस प्रकार वे शिक्षा का उद्देश्य चरित्र-निर्माण मानते थे, क्योंकि बिना अच्छे चरित्र के सुख और शांति सम्भव नहीं।

सामाजिक उद्देश्य- शिक्षा का उद्देश्य सामाजिक होना चाहिए क्योंकि समाज और व्यक्ति का घनिष्ठ सम्बन्ध है। समाज का एक स्थिर रूप नहीं होता। वह बदलता रहता है। समाज में परिवर्तन के साथ नीति के रूप में भी परिवर्तन होता है। इस सिद्धान्त को शिक्षा का सामाजिक उद्देश्य स्वीकार करता है। अतः शिक्षा का सामाजिक उद्देश्य समाज के हित के लिए ही व्यक्ति की शिक्षा का प्रबन्ध करना है।

सृजनात्मकता का विकास- जे. कृष्णमूर्ति का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य बालक की मन, शरीर और आत्मा तीनों की सृजनशीलता से है। इनके द्वारा बालकों पर किसी अन्य के विचारों को लादना नहीं चाहिए बल्कि उन्हें अपने निर्णय करने और कार्य करने के मुक्त अवसर प्रदान किये जाने चाहिए।

चरित्र का निर्माण- सभी शिक्षाविदों की तरह जे. कृष्णमूर्ति भी यह मानते थे कि षिक्षा का उद्देष्य बालक के चरित्र का निर्माण करना है। उनके अनुसार चरित्रवान का अर्थ असत्य को त्यागकर सत्य को अपनाने से लगाया है। वास्तव में सत्य की खोज करने और उस पर दृढ़ बने रहने से जो चरित्र निर्माण होता है, वह स्थायी और मूल्यवान होता है। ऐसे चरित्रवान व्यक्ति का जीवन स्वयं में ही एक आनन्द होता है। क्योंकि चरित्र निर्माण के लिए मेहनत और ऊर्जा की आवश्यकता होती है।

व्यावसायिक प्रशिक्षण- कृष्णमूर्ति का कहना है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आजीविका के लिए कोई न कोई व्यवसाय तो करना ही होता है, इसलिए शिक्षा का उद्देश्य किसी-न-किसी व्यवसाय हेतु, निपुर्णता प्रदान करना होना चाहिए।

संवेदनशीलता का विकास- जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य बालक को संवेदनशील बनाना है। बालक, भय, प्रतियोगिता और स्पर्धा से स्वतंत्र होंगे और इस प्रकार विश्व में चारों और मैत्री वातावरण स्थापित हो जायेगा।

वैज्ञानिक बुद्धि का विकास- जे. कृष्णमूर्ति कहते थे कि शिक्षा का उद्देश्य बालक में वैज्ञानिक बुद्धि का विकास करना होना चाहिए। वैज्ञानिक बुद्धि से उनका आशय तथ्यों के वास्तविक स्वरूप को जानना था।

शारीरिक विकास- स्वस्थ शरीर के लिए स्वस्थ मन का होना परम आवश्यक है। अतः बालक का शारीरिक विकास करना शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है। कृष्णमूर्ति जी कहते है कि जब बालक शारीरिक विकारों से स्वतंत्र होगा तभी वह प्रतिक्षण हमेशा नयी वस्तु का अनुसंधान करने का प्रयत्न करेगा।

मानसिक विकास- कृष्णमूर्ति जी ने शिक्षा का उद्देश्य बालक को दिये जाने वाले विभिन्न ज्ञान के साथ-साथ उसके मन को परम्पराओं के बोझ से स्वतंत्र करना भी है, जिससे वह आविष्कार करने, खोज करने और शोध करने में समर्थ हो सके।

सांस्कृतिक विकास- जे. कृष्णमूर्ति जी ने शिक्षा का उद्देश्य ऐसे मानव का निर्माण करने से है जो सुसंस्कृत, सभ्य और शिष्ट हो। इनका मानना है कि शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य में ऐसी शक्ति एवं अंतःचेतना की वृद्धि करना है जिससे वह पूर्वाग्रहों के विपरीत दृढतापूर्वक खड़ा हो सके और नवीन

www.ignited.in

संस्कृति व नवीन मूल्यों का निर्माण कर सके। जिससे एकीकृत मानव का निर्माण हो सके।

आध्यात्मिक मूल्यों का विकास- जे. कृष्णमूर्ति ने शिक्षा का उद्देश्य बालक में आध्यात्मिक मूल्यों का विकास करने से लगाया है। आध्यात्मिकता के विकास से इनका अर्थ आध्यात्मिक चेतना के विकास से है, नैतिक मूल्यों के विकास से है। शिक्षा का उद्देश्य बालक में ऐसी क्षमता उत्पन्न करना है कि वह अपने विचारों और कार्यो का हर संभव निरीक्षण करता रहे।

अतः जे. कृष्णमूर्ति जी का कहना था कि वास्तव में शिक्षा मनुष्य को सभ्य बनाने का कार्य करती हैं, शिक्षा प्राप्त कर मनुष्य समाज के साथ समायोजन कर अनुशासन के साथ जीवनयापन करता है। शिक्षा चाहे प्राथमिक हो, माध्यमिक हो या उच्च शिक्षा हो वह मनुष्य को आदर्शवादी बनाती हैं और उनमें नैतिक मूल्यों का विकास करती है। कृष्णमूर्ति जी के अनुसार 'शिक्षा व्यक्ति के समन्वित विकास की प्रक्रिया है।' शिक्षा मानव जीवन के लिए अत्यन्त आवष्यक है। शिक्षा द्वारा ही मनुष्य सभ्य और सुसंस्कृत बन जाता है। शिक्षा चाहे कोई भी हो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में शिक्षा ही मनुष्य की सबसे बड़ी सहयोगी के रूप में सामने आती है। शिक्षा का वास्तविक कार्य मनुष्य की जन्मजात शक्तियों की अभिव्यक्ति और उनका विकास करना ही है और शिक्षा के द्वारा ही यह पता चलता है कि मनुष्य का वास्तविक विचार और क्षमता क्या है।

जे. कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचार:- व्यक्ति के शारीरिक व मानसिक विकास के लिए कुछ मूलभूत शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति आवश्यक है, जिसके लिये आवश्यक है जीविकोपार्जन के साधनों का विकास। वर्तमान में षिक्षा एक ऐसा साधन हे जिसके द्वारा व्यक्ति को किसी न किसी व्यवसाय के योग्य बना दिया जाये जिससे व्यस्क जीवन में वह किसी पर आश्रित न रहे तथा स्वयं अपना व अपने परिवार का भरण पोषण कर सके। वास्तव में शिक्षा द्वारा सामंजस्य भी तभी स्थापित किया जा सकता है, जब कम से कम पेट भरने के उद्देश्य से बच्चों को उनकी रूचि, अभिक्षमता व योग्यता के अनुसार किसी उत्पादन कार्य में शिक्षित व प्रशिक्षित करना जिससे आगे वे समाज के उत्पादक सदस्य बन सके। जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार बालकों को उचित शिक्षा प्रदान करने हेतु शिक्षण और पाठ्यक्रम के साथ - साथ विद्यालय का वातावरण, स्वरूप, शिक्षक का व्यवहार, शिक्षक का दायित्व और अनुशासन आदि चीजों का सम्मिलित वातावरण होना अतिआवश्यक है, यथा -

विद्यालय का स्वरूप- विद्यालय शिक्षा का सक्रिय एवं औपचारिक साधन है। यह एक विशिष्ट साधन है जिसका अस्तित्व संस्कृतियों और सभ्यताओं की विकासशील जटिलता के कारण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो गया है। एस. बालकृष्ण जोशी ने लिखा है, 'किसी भी राष्ट्र की प्रगति का निर्माण विधानसभाओं, न्यायालयों और फैक्टरियों में नहीं, वरन् विद्यालयों में होता है। विद्यालय एक ऐसा स्थान है जहाँ सभ्यता और संस्कृति का संरक्षण एवं विकास होता है, जहाँ बच्चों को अच्छा नागरिक बनाया जाता है और विद्यार्थियों की शारीरिक, व्यावसायिक, नैतिक तथा सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा किया जाता है। विद्यालय मात्र शैक्षिक दृष्टि से श्रेष्ठ नहीं, अपितु समग्र मानव के निर्माण के लिए श्रेष्ठ बने। जे. कृष्णमूर्ति जी के अनुसार विद्यालय 'वह स्थान होना चाहिए जहां बालक मूलरूप से प्रसन्न व आनन्दित हो, उसे डराया-धमकाया नहीं जाए। वह परीक्षाओं, से भयभीत नहीं हो विद्यालय ऐसा स्थान होना चाहिए, जहाँ विद्यार्थी का आन्तरिक रूपान्तरण हो उन्हें ऐसी जीवन शैली सिखाई जाये जिसका महत्व व उपयोगिता सम्यक हो। शिक्षक एवं शिक्षार्थी मिलकर जीवन के मौलिक प्रश्नों का अनुसंधान कर सकें, इसी दृष्टि से उन्होंने भारत, इंग्लैण्ड़ एवं अमेरिका में विद्यालयों की स्थापना की। समय-समय पर वे इन विद्यालयों को पत्र लिखते थे जिनमें शिक्षक-शिक्षार्थी के सम्बन्धों, शिक्षा के स्वरूप एवं उद्देश्य तथा अभिभावक की भूमिका एवं उत्तरदायित्व पर विस्तार से प्रकाश डालते थे।

शिक्षक का स्वरूप- हम अपने जीवन में जो ऊँचाईयाँ छूना चाहते हैं, उसके लिए हमें उस दिशा में निरंतर प्रयास करते रहना होता है। वो प्रयास कभी कभी सार्थक तो कभी हमें हमारी सही दिशा से भटका देते है। हमें गलत रास्तों से सही रास्ते पर आने के लिए कुछ विशेष ज्ञान की जरूरत पड़ती है, वो ज्ञान हमें शिक्षक के द्वारा ही प्राप्त होता है। एक विद्यार्थी के जीवन में शिक्षक एक ऐसा महत्त्वपूर्ण इंसान होता है जो अपने ज्ञान, धैर्य, प्यार और देखभाल से उसके पूरे जीवन को एक मजबूत आकार देता है। एक शिक्षक के पेशे को दुनिया में सबसे अच्छे और आदर्ष पेशे के रूप में जाना जाता है, क्योंकि शिक्षक किसी के जीवन को बनाने में निस्वार्थ भाव से अपनी सेवा देते है। जे. कृष्णमूर्ति जी इस बात पर बल देते थे कि शिक्षक को एक "संपूर्ण मानव" होना चाहिए। संपूर्ण मानव का अर्थ चेतना, अहिंसा तथा प्रेम जैसे गुणों से युक्त होना है। शिक्षक को जातिवाद, क्षेत्रवाद, पूर्वाग्रहों आदि में सम्मिलित नहीं होना चाहिए। शिक्षक का स्थान एक मित्र, दार्शनिक तथा निर्देशक की तरह है।

शिक्षक के कार्य- शिक्षक का कार्य केवल विद्यार्थियों को ज्ञान देना ही नहीं है। ज्ञान देने के अलावा ऐसे बहुत से कार्य है जो सिर्फ एक शिक्षक ही कर सकता है। जे. कृष्णमूर्ति जी के

अनुसार शिक्षक को सही रूप में एकीकृत मानव होना चाहिए। उसको धैर्य पूर्ण होना चाहिए उसको अपने शिष्यों से प्रेमपूर्ण व्यवहार करना चाहिए और स्वयं सीखने में उसकी हर संभव सहायता करनी चाहिए। शिक्षक को छात्रों में सचेतना और उद्यमिता लानी चाहिए। शिक्षक को विद्यार्थी के चरित्र निर्माण और आत्मिक उत्सर्ग के लिए पूरी तरह समर्पित रहना चाहिए।

शिक्षक के दायित्व- शिक्षक को एक आदर्श की भाँति बच्चों के मन में ईमानदारी, अनुशासन, राष्ट्र भक्ति, सच्चरित्रता, स्वावलम्बन आदि के प्रति उत्साह भी भरना पड़ता है तो कभी एक समाज निर्माता के रूप में न केवल अपने विद्यार्थियो में बल्कि समाज के विभिन्न वर्गो, जातियों व समुदायों के नागरिको में, परिवार, समाज, राष्ट्र और मानवता के प्रति उनके अधिकार, कत्र्तव्य एवं दायित्वों से संबंधित चेतना जगाकर उनका मार्गदर्शन भी करना पड़ता है। इनके अतिरिक्त शिक्षक को अपने विद्यालय एवं उसके शासकीय कार्यो से भी संबंधित विविध प्रकार के दायित्वों जैसे-प्रधानाध्यापक वर्ग शिक्षक, विज्ञान शिक्षक, कला शिक्षक, परीक्षा नियंत्रक, निरीक्षक, परीक्षक आदि के दायित्वों का भी पालन करना पड़ता है। शिक्षक का दायित्व विविधतापूर्ण, अनंत एवं असीमित है। एक सुयोग्य, कर्मठ एवं जिम्मेवार शिक्षक मात्र पठन-पाठन क्रिया को सम्पन्न करने भर के दायित्व तक ही अपने आपको सीमित नहीं रख सकता है, क्योंकि उसका प्रमुख दायित्व होता है बच्चों को सर्वगुण सम्पन्न बनाना।

बालक की जिज्ञासा- बालक का मन जिज्ञासाओं से भरा होता है। बालकों में जानने की जिज्ञासा एवं सीखने की प्रवृत्ति सहज रूप से विद्यमान होती है। यही कारण है कि बालक हमेशा प्रश्न पूछते रहते है, क्योंकि हर समय उन्हें कुछ ना कुछ जानना होता है। शिक्षा का मूल उद्देश्य होता है बालक की अन्तः निहित क्षमताओं को विकसित करना। विद्यालय शिक्षा का ऐसा केन्द्र है जहां पर विद्यार्थी अपनी जिज्ञासा को अध्यापक के समक्ष प्रस्तुत कर उनका निवारण करता है। शिक्षा के द्वारा ही बालक की जिज्ञासा को शांत कर उसका सही मार्गदर्शन किया जाता है। जे. कृष्णमूर्ति जी कहते है कि- 'सहज जिज्ञासा एवं सीखने की प्रवृत्ति बालक में बिल्कुल शुरू से रहती है। आवश्यकता है कि समझदारी के साथ प्रोत्साहन देते रहना चाहिए ताकि वह सक्रिय बनी रहे, विकृत ना हो।'

शिक्षा एवं अनुशासन- जे. कृष्णमूर्ति का मानना था कि बच्चों में बचपन से ही अच्छी अभिरूचियाँ विकसित हो सके। उनके अनुसार अनुशासन के मामले में भी हमारी शिक्षा में सही समझ का बेहद अभाव है। शिक्षा में सही सोच व संसाधनों का अभाव होने के कारण उसे अनुशासन से नियमित करने की कोशिश की जाती है। अनुशासन को लेकर जे. कृष्णमूर्ति ने कहा था कि 'आप जितना अधिक अनुशासनबद्ध होते हैं, आप जितना अधिक अंकुश स्वयं पर लगाते हैं, जितना दमन करते है और जितना अधिक संयम साधते हैं, आपका मन उतना ही अधिक संयम साधते हैं, आपका मन उतना ही अधिक संकीर्ण, क्षुद्र होने लगता है। वे कहते थे कि प्रधानाचार्य किसी विद्यालय का प्रकाश स्तम्भ होता है, और वही वास्तविक रूप से अनुशासन है। कृष्णमूर्ति जी का कहना है कि यदि प्रेम करते है तो अनुशासन की आवश्यकता ही नहीं रह जाती क्योंकि प्रेम स्वयं सृजनात्मक बोध क्षमता लाता है, इसलिए वहाँ न प्रतिरोध होता है और न संघर्ष।

जे. कृष्णमूर्ति जी कहते थे कि शिक्षा का उद्देश्य छात्रों के विवेक तथा ज्ञान को उत्प्रेरित करना है, जिससे भावी जीवन में वे अज्ञान से पूर्णतया मुक्त हो सके और अच्छा जीवन व्यतीत कर सकें। शिक्षा मनुष्य को अविद्या से मुक्त कर सद्ज्ञान की ओर प्रेरित करती है तथा दृष्टि की सीमाओं को असीम बनाती है और शक्तिहीनता को समाप्तकर अनन्त शक्ति प्रदान करती है। जे. कृष्णमूर्ति जी ने अपने शैक्षिक विचारों में बताया है कि मुक्ति प्राप्त करने के लिये कुछ साधनों की आवश्यकता होती थी, उन्हें "साधन चतुष्टय" कहा जाता थां इन साधनों के द्वारा व्यक्ति को पूर्णता की ओर ले जाने का प्रयास किया जाता था। जिससे व्यक्ति जगत और ब्रह्म के बीच, शरीर और आत्मा में भेद कर सके। व्यक्ति को तृष्णाओं का त्याग जरूरी है। भौतिक सुख व्यक्ति को असंयमित कर देते हैं। इसलिए भोगों के प्रति विरक्ति का भाव आवष्यक है। व्यक्ति को अपने मन द्वारा ही जीवनमुक्त बनना चाहिये। ज्ञान प्राप्त हो जाने पर यह संसार नष्ट नहीं हो जाता अपितु मिथ्या लगने लगता है। संसार की तृष्णाएँ उसे मोहित नहीं करती। सभी प्रकार के प्रलोभनों से दूर सुख-दुख से निरपेक्ष जीवन ही मुक्त जीवन है।

जे. कृष्णमूर्ति जी ने भारतीय शिक्षा में नवयुग का निर्माण कर महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी दृष्टि में रट-रटाकर परीक्षा उत्तीर्ण कर डिग्री प्राप्त करने को शिक्षा नहीं कहा जा सकता, बल्कि शिक्षा वहीं है जो आत्मज्ञान कराने में समर्थ हो अर्थात् शिक्षा का मूल उद्देश्य वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिकता में सही समन्वय स्थापित कर एक सन्तुलित मानव का विकास करना है। जे. कृष्णमूर्ति जी का मानना था कि शिक्षा ऐसी हो जो मनुष्य में जीवन के प्रति एक नयी विचारधारा विकसित कर सके तथा उसके द्वारा व्यक्ति आत्म-विश्लेषण करके वास्तविकता का ज्ञान प्राप्त कर सके। आत्म विश्लेषण से ही व्यक्ति को वास्तविकता का ज्ञान होता है और वह प्रेममार्ग को अपनाता है। इस प्रेम मार्ग से ही वह समभाव में बँधता है और स्वार्थ का परित्याग करता है। यह सब शिक्षा के द्वारा ही

सम्भव है। शिक्षा ही एक ऐसी कुंजी है जो व्यक्ति को उसकी सफलता तक पहुँचा सकती हैं।

शिक्षा द्वारा नव भारतीय समाज का निर्माण:- जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा के द्वारा ही नव-युग एवं विश्व का निर्माण किया जा सकता है। उनके अनुसार शिक्षा का प्रमुख कार्य शिक्षक, छात्र तथा अभिभावक तीनों को शिक्षित करना है। शिक्षा मनुष्य को केवल संस्कारयुक्त बनाने में ही सहयोग नहीं करती बल्कि यह जीवन की सम्पूर्ण प्रक्रिया को समझने में भी सहायता करती है ताकि वह स्वतन्त्रता के साथ बढ़ सके और एक नव भारतीय समाज का निर्माण कर सके। जे. कृष्णमूर्ति जी ने अपने शिक्षा के उद्देष्यों में शारीरिक शिक्षा, नैतिक शिक्षा, संवेगात्मक विकास, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय भावना का विकास, व्यावसायिक विकास आदि को सम्मिलित किया है, जो कि वर्तमान शैक्षिक जगत और भारतीय समाज के लिए आवश्यक और उपादेय होगा।

विद्यालय के लिए उपादेयता:- जे. कृष्णमूर्ति जी ने शिक्षण संस्थाओं एवं इनमें कार्यरत शिक्षक कर्मचारियों एवं छात्रों के उत्तरदायित्व तथा उनकी सहभागिता को स्पष्ट करने के लिए अनेक पत्र लिखे है। इन्होंने पत्रों की महत्ता को स्पष्ट करते हुए लिखा है, "मेरी हार्दिक इच्छा है कि इन पत्रों को लिखता रहूँ ताकि उन्हें बता सकूँ कि विद्यालय को कैसा होना चाहिए। उन सभी व्यक्तियों को जिनके कन्धों पर इनका उत्तरदायित्व है उन्हें बता सकूँ कि विद्यालयों को केवल शैक्षिक रूप से ही श्रेष्ठ नहीं होना है बल्कि बहुत कुछ और भी करना है। वस्तुतः इनको सम्पूर्ण मानव से जुड़ना है। शिक्षा के इन केन्द्रों को चाहिए कि वे शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों को सहज रूप से प्रस्फुटित होने में मदद करे। यह प्रस्फुटन अत्यन्त आवष्यक है अन्यथा शिक्षा किसी न किसी व्यवसाय या जीविका की ओर उन्मुख रहने वाली मात्र एक यान्त्रिक प्रक्रिया बनकर रह जाएगी। अभी जिस प्रकार का समाज है उसके अनुसार जीविका और व्यवसाय अवश्यम्भावी है लेकिन अगर हम सारा महत्त्व उसी को दे दें, तो प्रस्फुटित होने की स्वतन्त्रता धीरे-धीरे समाप्त हो जाएगी।"

जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार विद्यालयों में काम करने वाले लोगों का एक महत्वपूर्ण कार्य यह भी है कि शिक्षार्थियों को उनकी आजीविका के लिए शैक्षिक विषयों का ज्ञान देने के साथ-साथ उनमें सम्पूर्ण मानव जीवन के उत्तरदायित्व का विस्तृत बोध कराया जाए। इनकी दृष्टि में विद्यालय का अभिप्राय हैं, वह स्थान जहाँ विद्यार्थी पूर्ण रूप से प्रसन्नचित रहता है। उसे डराया, धमकाया नहीं जाता, जहाँ वह परीक्षाओं से भयभीत नहीं होता तथा जहाँ उसे एक पद्धति के अनुसार कार्य करने के लिए बाध्य नहीं किया जाता। विद्यालय वह स्थान है जहाँ सीखने की कला सिखाई जाती है। यदि विद्यार्थी प्रसन्नचित नहीं है तो वह इस कला को सीखने में असमर्थ रहता है। जे. कृष्णामूर्ति के अनुसार प्रधानाचार्य किसी विद्यालय का प्रकाश स्तम्भ होता है। यदि वह समन्वित व्यक्तित्व का व्यक्ति नहीं है, तो विद्यालय का पतन होना निश्चित है। प्रधानाचार्य के अतिरिक्त सभी शिक्षकों को भी विद्यालय के प्रति अपने को उत्तरदायी समझना चाहिए। जे. कृष्णमूर्ति ने अपने शिक्षा दर्शन के आधार पर कुछ विद्यालयों की स्थापना की। जिनमें प्रमुख विद्यालय है- राजघाट स्कूल और ब्राॅकवुक पार्क स्कूल। राजघाट स्कूल वाराणसी में स्थित है। यह एक आवासीय व सह-शिक्षा का विद्यालय है। 6 से 18 वर्ष के विद्यार्थी यहाँ विद्या अध्ययन करते है। ज्यादातर शिक्षक यहाँ बच्चों के साथ ही उनके अभिभावक की तरह रहते हैं। इस विद्यालय का मुख्य उद्देश्य बच्चों का सर्वांगीण विकास करना है। साथ ही बच्चों को इस तरह से विकसित करने से हैं जिसमें बच्चे का मस्तिष्क किसी तरह की मान्यताओं से अनुकूलित न हो। बच्चों में खोजबीन व मस्तिष्क के खुलेपन को बढ़ावा देना तथा उनमें प्रकृति के प्रति प्यार व जीवन के प्रति सम्मान जैसे मूल्यों को विकसित करना भी इस स्कूल के प्रमुख उद्देश्य है। इसी प्रकार ब्राॅकवुड पार्क स्कूल जो कि लंदन के पास में स्थित एक माध्यमिक विद्यालय है। इस विद्यालय के प्रमुख उद्देश्य इस बात को जानना है कि आधुनिक समाज में व्यक्ति की क्या जिम्मेदारी व स्वतंत्रता है, खासतौर पर दूसरों के साथ अपने रिष्तों के संदर्भ में एंव स्वयं के अंतद्र्वन्द्व व आत्म केन्द्रित कर्म से स्वतन्त्र हो पाने की संभावना को देख पाना।

- जे. कृष्णमूर्ति के विद्यालय सम्बन्धी विचारों की निम्नलिखित उपादेयता है-
- सभ्यता और संस्कृति के संरक्षण एवं विकास में सहायक।
- बालक की शारीरिक, व्यावसायिक, नैतिक तथा सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक।
- बालक के आन्तरिक रूपान्तरण में सहायक।
- शिक्षक व शिक्षार्थी के आन्तरिक व मनोवैज्ञानिक रूप को सुरक्षित रखना।
- नवीन समाज के निर्माण में सहायक तथा समाज में सकारात्मक परिवर्तन सम्भव।
- आजीविका के लिए शैक्षिक विषयों की जानकारी के साथ-साथ सम्पूर्ण मानव जाति एवं सम्पूर्ण मानव जीवन के प्रति उत्तरदायित्व का बोध।
- बालक के व्यक्तित्व को समन्वित व प्रज्ञावान बनाने में सहायक।
- छोटे विद्यालयों को प्राथमिकता दी जाये।

- विद्यालयों में समता और सहयोग की भावना का विकास।
- व्यक्तिगत स्वतन्त्रता एवं प्रज्ञा के भाव से परिपूर्ण।
- सम्यक् एवं समग्र शिक्षा का विकास।

शिक्षक के लिए उपादेयता:- जे. कृष्णमूर्ति जी यह मानते थे कि विद्यालय को स्वयं के द्वारा निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए शिक्षकों का आपस में जुड़कर काम करना जरूरी है। शिक्षक का पहला काम यह है कि वह पहले खुद के विचारों व भावनाओं के प्रति सचेत हो और खुद के अनुकूलन व व्यवहार पर इसके प्रभाव को परखे। उनके अनुसार शिक्षक को खुले मस्तिष्क वाला व संवेदनशील होना चाहिए। वास्तव में शिक्षक का स्थान बालक के मित्र, सहयोगी, पथ-प्रदर्षक में माना है। उनके अनुसार शिक्षक ज्ञान देने वाला न होकर मार्गदर्शक, सहायक और आदर्श होना चाहिए। जे.कृष्णमूर्ति जी के शिक्षक सम्बन्धी विचारों की निम्नलिखित उपादेयता है-

- विद्यार्थी के जीवन को मजबूत आकार देने में सहायक।
- स्वयं को समझकर बालक के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाने में सहायक।
- नवीन शिक्षा का सृजन करने में सहायक।
- अहिंसा, चेतना तथा प्रेम जैसे संपूर्ण मानवीय गुणों से युक्त, अच्छे चरित्र का निर्माण करने में सहायक।
- शिक्षक के ईमानदारी तथा सच्चाई का दृष्टिकोण विद्यार्थियों के लिए प्रोत्साहन करेगा।
- शिक्षक की दृढ़ता और निश्चितता में बालक आश्वस्त रहता है।
- एक सच्चा शिक्षक अध्यापन को तकनीक नहीं अपनी जीवन पद्धति मानता है जिसमें वह निरन्तर सृजनशील कार्य कर बालकों के लिए आदर्श प्रस्तुत करता है।
- शिक्षक विद्यार्थियों को एक बेहतर और उदात्त जीवन की और मार्गदर्शन करने में सहायक होता है।
- छात्रों की प्रतिभा को प्रतिबंधित करने वाले प्रभावों से मुक्त करना है।
- छात्रों को स्वावलम्बी बनाने में सहायक।
- जीवन के रहस्यों को समझाने में सहायक।
- विद्यार्थी को कुंठा, हताश, भय से मुक्त रखता है।
- छात्रों को एक बेहतर और उदार जीवन की ओर प्रेरित करना।
- विद्यार्थियों को आगे बढ़ने और एक नूतन विश्व के निर्माण करने के लिए प्रेरित करता है।
- विद्यार्थियों को आतंरिक समृद्धि की ओर अग्रसर करना तथा उन्हें आत्मज्ञान की शिक्षा प्रदान करता है।

विद्यार्थी के लिए उपादेयता:-शिक्षार्थी के सम्बन्ध में जे.कृष्णमूर्ति जी का मानना था कि विद्यार्थी में विनय, परोपकार, स्वाध्याय, एकाग्रता, सेवा आदि गुणों का समावेश होना आवश्यक है। कृष्णमूर्ति शिक्षा प्रक्रिया में शिक्षार्थी को भी महत्वपूर्ण मानते हैं। उनका मत है कि विद्यार्थी ऐसा होना चाहिए जो शिक्षक को सम्मान दे। उसमें आत्म-दृढ़ता का समावेश होना चाहिए। वह शारीरिक व सामाजिक रूप से पूर्णतया स्वस्थ होना चाहिए। उसे निड़र होना चाहिए। छात्र को अपने शिक्षकों के ज्ञान व अनुभव से शिक्षा लेनी चाहिए तथा सत्य की खोज के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। उनका कहना था कि शिक्षार्थी को बाल्यावस्था से ही उसके व्यक्तित्व के विकास हेतु पूर्णतया स्वतन्त्र छोड़ देना चाहिए। उस पर किसी प्रकार का बन्धन नहीं होना चाहिए। यदि शिक्षार्थी बन्धन नहीं होगा तो वह परिपक्व होगा तथा वह हर क्षेत्र में अनुसंधान करेगा। जे. कृष्णमूर्ति के विद्यार्थी सम्बन्धी विचारों की वर्तमान में उपादेयता निम्न प्रकार है-

- विद्यार्थी में अन्तःनिहित क्षमताओं का विकास होगा।
- विद्यार्थी की जिज्ञासा बढेगी तथा उनका सही मार्गदर्शन होगा।
- सही मार्गदर्शन से बालक को सीखने में आसानी होगी।
- विद्यार्थी में अवलोकन क्षमता विकसित होगी।
- शिक्षक और शिक्षार्थी के मध्य सहयोग की भावना विकसित होगी।
- बालक की संपूर्ण समन्वित क्षमता का विकास होगा।
- उनके विचारों के अनुरूप विद्यार्थी को शिक्षित करने से एक नूतन संस्कृति तथा नूतन समाज और विश्व का निर्माण होगा।
- विद्यार्थी को शाश्वत जीवन को समझने तथा मानवता की सहायता में सहायक।
- नवीन समाज की रचना करने में सहायक सिद्ध होगे।

शैक्षिक पाठ्यक्रम के लिए उपादेयता:- जे .कृष्णमूर्ति जी मनोविज्ञान के बड़े पारखी थे। वे चाहते थे कि पाठ्यक्रम में ऐसे ही पाठ्यक्रम का समावेश किया जाये जो बालकों की आवश्यकता और रूचि के अनुकूल हो। उनके अनुसार पाठ्यक्रम ऐसा न हो जिसका अध्ययन करने के लिए बालक बाध्यता का अनुभव करे। अतः पाठ्यक्रम में विषयों को बड़े ही मनोवैज्ञानिक ढंग से संजोना चाहिए ताकि उनके अध्ययन में बालक स्वाभाविक रूप से रूचि ले। वे पाठ्यक्रम की रोचकता पर बल देते थे और ऐसे विषयों को पाठ्यक्रम में स्थान देना

चाहते थे जिनका ज्ञान, व्यावहारिक जीवन के लिए प्राप्त करना आवश्यक हैं वे चाहते थे कि पाठ्यक्रम में भाषा, साहित्य, गणित, मूर्तिकला, वास्तुकला, गृहविज्ञान इत्यादि विषयों को प्रमुख स्थान दिया जाये क्योंकि इन विषयों की शिक्षा दैनिक जीवन में काम आती है। इसके साथ-साथ विज्ञान, मनोविज्ञान, तकनीकी शास्त्र, उद्योग कौशल, खेलकूद, व्यायाम, इतिहास, भूगोल आदि विषयों को भी पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने की बात कही।

जे.कृष्णमूर्ति जी के अनुसार बालकों में प्रभावशाली विधि से व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रीयता की भावना के विकास के लिए एक अच्छे पाठ्यक्रम का निर्माण अत्यन्त आवश्यक है। उन्होंने पाठ्यक्रम निर्माण में निम्नलिखित बिन्दुओं के समावेश पर बल दिया है-

नैतिक गुणों की शिक्षा:- कृष्णमूर्ति जी के अनुसार आधुनिक युग में तकनीकी ज्ञान के साथ-साथ नैतिक गुणों का विकास भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

क्रियाशीलता:- कृष्णमूर्ति जी ऐसे पाठ्यक्रम के पक्षधर है जो बालकों में ज्ञान के विकास के साथ-साथ उन्हें क्रियाशील भी बनाए।

अधिगम एवं उपयोगिता:- पाठ्यक्रम ऐसा हो जो अधिगम मे ंसहायक तथा भावी जीवन के लिए उपयोगी हो अर्थात् पाठ्यक्रम बालकों की आवश्यकताओं को पूरा करने वाला हो। उन्होंने पाठ्यक्रम में लिखने पर अत्यधिक जोर दिया है।

उद्देश्यपूर्ण पाठ्यक्रम:- शिक्षा का पाठ्यक्रम बालकों के लिए उद्देश्यपूर्ण होना अत्यधिक आवश्यक है। यदि पाठ्यक्रम उद्देश्यरहित होगा तो ऐसे पाठ्यक्रम के अध्ययन का बालक को कोई लाभ नहीं होगा। अतः बालकों के लिए ऐसी पाठ्य-सामग्री की आवश्यकता है जो उसके उद्देश्य को पूर्ण कर सके।

संतुलित पाठ्यक्रम:- कृष्णमूर्ति जी के अनुसार पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जो सभी व्यक्तियों के लिए लाभदायक हो, इसलिए उन्होंने संतुलित पाठ्यक्रम पर बल दिया है।

जे.कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा का पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जो मानव का विकास कर सकें। इन्होंने भौतिक ज्ञान एवं व्यावसायिक शिक्षा के लिए विज्ञान तथा तकनीकी, जीवन यापन हेतु व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा सौन्दर्य बोध व सृजनात्मकता के विकास हेतु कला संगीत व कविता को पाठ्यक्रम में शामिल करने का समर्थन किया है। उन्होंने सुझाव दिया कि पाठ्यचर्या बच्चों की रूचि के अनुसार होनी चाहिए। पाठ्यचर्या में विषय एवं पाठ्यवस्तु का संगठन बाल मनोविज्ञान के सिद्धान्तों के आधार पर होना चाहिए जिससे बालक की स्वाभाविक रूचि विकसित की जा सकती है। व्यावसायिक शिक्षा के अन्तर्गत विज्ञान एवं तकनीक, मूर्तिकला, वास्तुकला, गृहविज्ञान, औद्योगिक कौशल, साहित्य आदि के अध्ययन से बालक का भविष्य सुरक्षित होगा और वह किसी भी प्रकार से अपना जीविकोपार्जन कर पाएगा।

सर्वांगीण क्षेत्र के लिए उपादेयता:- मनुष्य का चहुँमुखी विकास शिक्षा के द्वारा ही संभव है। शिक्षा उद्देश्यपूर्ण होनी चाहिए। शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है। इसके विभिन्न पहलू है- शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक तथा आध्यात्मिक। यदि इनमें से किसी एक पहलू का विकास न किया गया तो बालक अपने भावी जीवन के अनेक क्षेत्रों में असफल हो जाएगा। जे. कृष्णमूर्ति जी सर्वांगीण विकास को शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य मानते है। इनके अनुसार विद्यालयों में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करने के लिए पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ पाठ्य-सहगामी क्रियाओं को भी उचित महत्व देना चाहिए। "राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005" में बालक के सर्वांगीण विकास हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किए गए है।

- शिक्षा बालक के अंदर छिपी हुई शक्तियों को बाह्य रूप से प्रकट करती है। बालक अपने पूर्व-ज्ञान के आधार पर नये ज्ञान के साथ अंतक्रिया करके सीखता है। षिक्षा के उद्देश्यों में महत्वपूर्ण उद्देश्य बालकों का सर्वांगीण विकास करना है। सर्वांगीण विकास से तात्पर्य है विद्यार्थियों का शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक और आध्यात्मिक आदि विकास करना। बालकों में मनोसामाजिक, ज्ञानात्मक पक्ष एवं विभिन्न कलात्मक कौशलों का विकास करना ताकि बालक भविष्य में एक कौशलयुक्त सफल नागरिक बन सके तथा जीवन की समस्याओं को सुलझाकर सुखपूर्वक जीवनयापन कर सके। प्रसिद्ध शिक्षक एवं दार्शनिक जे.कृष्णमूर्ति जी भी विद्यार्थियों के समग्र विकास की बात करते है। उनके अनुसार व्यक्तित्व का पूर्ण एकीकरण ही समग्रता है। इसमें मनुष्य के कार्य, कथन और विचारों में एकता होती है।
- यह समग्रता तब तक नहीं हो सकेगी, जब तक बालक सामाजिक रूप से विकसित नहीं होगे। विद्यालयों में विषयों के शिक्षण द्वारा विद्यार्थियों के ज्ञानात्मक अर्थात् बौद्धिक पक्ष का विकास तो होता है, परन्तु सामाजिक, संवेगात्मक, शारीरिक आदि पक्ष उपेक्षित

ही रहते है। विद्यालयों में शैक्षिक विषयों के साथ-साथ पाठ्य-सहगामी क्रियाकलापों का भी समय-समय पर नियमित एवं अनिवार्य रूप से आयोजन करने से बालक का सर्वांगीण विकास हो सकता है।

- शिक्षा द्वारा व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास हेतु शिक्षण के उद्देश्यों को बी.एस.ब्लूम ने तीन भागों में बाँटा- ज्ञानात्मक पक्ष भावात्मक पक्ष एवं क्रियात्मक पक्ष। विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करने के लिए हमें बालकों के साथ-साथ शिक्षकों को कौशलयुक्त प्रशिक्षण देना होगा। शिक्षको के लिए नवाचार कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए। शिक्षकों को कम्प्यूटर का प्रशिक्षण, पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का प्रबंधन, खेलों का प्रशिक्षण इस तरह से कराया जाए कि वे अपने विद्यालयों में जाकर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को निखार सके। जे. कृष्णमूर्ति जी का मानना था कि किशोरों की आवश्यकताओं को समझने हेतु शिक्षक शिक्षा में बाल मनोविज्ञान एवं मनोविज्ञान जैसे विषयों को लागू करना चाहिए। शिक्षकों को विद्यार्थियों की मनोदशा भाँपकर उन्हें अभिप्रेरित करने का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। वर्तमान में विद्यालयों में बालक के सर्वांगीण विकास के लिए खेलकूद, वाद-विवाद जैसी अनेक पाठ्य सहगामी क्रियाओं को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है, परन्तु सही रूप से इसका उपयोग विद्यालय प्रबन्धन द्वारा नहीं किया जा रहा है, जिससे की बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास संभव नहीं हो पा रहा है। जे.कृष्णमूर्ति जी के सर्वांगीण विकास से सम्बन्धित विचार सहायक सिद्ध हो सकते है। जे.कृष्णमूर्ति जी के शैक्षिक चिन्तन की सर्वांगीण क्षेत्र के लिए निम्नलिखित उपयोगिता है-
    - अध्यापकों की व्यवस्था से शिक्षण कार्य सुचारू रूप से चलता रहेगा।
    - शिक्षक-विद्यार्थी अनुपात सही होने से शिक्षक सभी विद्यार्थियों से व्यक्तिगत रूप से रूबरू हो पाएगा।
    - नवाचारों से अवगत होने पर बालक नए ज्ञान को सीखकर अपना सर्वांगीण विकास कर पाएगा।
    - सृजनशील और रचनात्मक दृष्टिकोण विकसित होगा।
    - पाठ्यसहगामी क्रियाओं के द्वारा विषयों के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों में जैसे- खेद-कद्, वाद-विवाद आदि में भी विकास होगा।
    - समग्रता से व्यक्ति के सम्पूर्ण पक्षों का एकीकरण होगा।

जे. कृष्णमूर्ति जी ने बालक के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए अपने शैक्षिक उद्देश्यों में शारीरिक शिक्षा, नैतिक विकास, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय भावना का विकास तथा व्यावसायिक विकास पर अत्यधिक बल दिया है। उन्होंने अपने शिक्षण पद्धति के अन्तर्गत ऐसी पद्धतियों का वर्णन किया जो बालकों के मनोभावों और रूचियों का अध्ययन करते हुए बालक के सर्वांगीण विकास में सहायक हो सके और उसकी उपादेयता सर्वकालिक है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में जे.कृष्णमूर्ति के शैक्षिक चिन्तन का नव भारतीय समाज के निर्माण में उपादेयता से सम्बन्धित तथ्यों का विवेचन किया गया है,जिसमें जे.कृष्णमूर्ति जी के सम्पूर्ण शैक्षिक विचारों का नव-भारतीय समाज में उपयोगिता को स्पष्ट किया गया है। इसके अन्तर्गत जे.कृष्णमूर्ति जी के शैक्षिक विचारों की विद्यालय के लिए उपादेयता, शिक्षक के लिए उपादेयता, विद्यार्थी के लिए उपादेयता, शैक्षिक पाठ्यक्रम के लिए उपादेयता, सर्वांगीण विकास के लिए उपादेयता पर प्रकाष डाला गया है, जिससे की उनके सम्पूर्ण शैक्षिक विचारों को स्पष्ट किया जा सके। उपरोक्त सुझाए गए जे.कृष्णमूर्ति के शैक्षिक चिन्तन के विभिन्न आयामों को स्वीकार करते हुए वास्तविक जीवन और सामाजिक जीवन में लागू किया जाए तो वर्तमान शैक्षिक परिदृष्य और नव-भारतीय समाज के निर्माण में उक्त उपादेयता मील का पत्थर साबित होगा।

सन्दर्भ

1. पाठक, पी.डी. 'शिक्षा मनोविज्ञान' संस्करण डाॅ, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
2. जिददू कृष्णमर्ति - जिददू कृष्णमर्ति के शैक्षिक विचारों का अध्ययन''रिव्यू आॅफ रिसर्च टवसनउमण्8ए पेेनमण्7 ।चतपस 2019।
3. तिवारी सत्यप्रकाश, भारद्वाज, डां. रतन कुमार-रिव्यू आॅफ रिसर्च, टवसनउमण्8एपेेनमण्7 ।चतपस 2019 जिददू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों का अध्ययन'।
4. कृष्णमूर्ति जिदू (2008)- 'शिक्षा क्या है?' प्रथम संस्करण, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट दिल्ली।
5. सिंह, डां. मनोज कुमार (2005)- 'शिक्षा और समाज' प्रथम संस्करण, आदित्य पब्लिशर्स, दरियागंज, नई दिल्ली।

6. कृष्णमूर्ति जिदू (2005)- 'शिक्षा एवं जीवन का तात्पर्य' प्रथम-संशोधित संस्करण कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इंडिया राजघाट कोर्ट, वाराणसी।
7. आहूजा, बलीराम (2006)- ''शिक्षा के आधारभूत सिद्धान्त प्रथम-संस्करण, ओमेगा पब्लिकेशन दरियागंज, नई दिल्ली।
8. कृष्णमूर्ति जिदू - 'स्कूलो के नाम पत्र-2' कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन, इंडिया, राजघाट कोर्ट, वाराणसी।
9. टिकेकर, डां. इन्दु (2001)'बच्चों के मित्र' प्रथम संस्करण, सर्व सेवा संघ, वासरणसी।
10. कृष्णमूर्ति जिदू (दिसम्बर- 2015)- 'स्वयं से संवाद' कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इंडिया राजघाट कोर्ट, वाराणसी

Corresponding Author

अशोक कुमार*

शोधार्थी, राजऋर्षि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय, अवलर (राज.)